

सितंबर 2026

अंक 10

अंतरदेश

सरहदों के पार हिंदी का संसार



अंतरदेश (प्रकृति विशेषांक)
सरहदों के पार हिंदी का संसार

सितंबर 2026, अंक 10
संपादक
हंसा दीप
यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो, कनाडा

सहायक संपादक
वेदप्रकाश सिंह
ओसाका विश्वविद्यालय, जापान

परामर्श मंडल:

अडेलै हेनिश-टेम्बे, लाइप्सिग विश्वविद्यालय, जर्मनी
आनंद वर्धन शर्मा, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एरिका करांति, तूरीन विश्वविद्यालय, इटली
दिव्यराज अमिय, त्युबिंगन विश्वविद्यालय, जर्मनी और ज्यूरिख विश्वविद्यालय स्विट्जरलैंड
राम प्रसाद भट्ट, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी
ली यालान, बीजिंग फ़ॉरन स्टडीज़ यूनिवर्सिटी, चीन
शिव कुमार सिंह, लिस्बन विश्वविद्यालय, पुर्तगाल

स्थायी संपर्क पता:

नॉटनल, स्वत्वाधिकार © 2024
16/1454, इंदिरा नगर, लखनऊ- 226016, उत्तर प्रदेश, भारत
antardesh.patrika@gmail.com

अंतरदेश से जुड़े कानूनी विवाद लखनऊ उच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में आएँगे। मौखिक और लिखित रचनाओं और कृतियों में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं, नॉटनल, संपादक और संपादक मंडल के नहीं।

अनुक्रम

• संपादकीय	4
प्रकृति विशेष	
• कमली – सुधा ओम ढींगरा	8
सिने दृष्टि	
• फिल्मों में प्रकृति और पर्यावरण: जब पर्दे पर बोलने लगी पृथ्वी – राजेश सिन्हा	20
पृथ्वी दिवस	
• रत्नगर्भा हरित वसुंधरा - मीना श्रीवास्तव	33
ग्लोबल वार्मिंग	
• ग्लोबल वार्मिंग के दौर में प्रकृति, संस्कृति और हमारी जिम्मेदारी - सुनीता शर्मा	44
• ग्लोबल वार्मिंग की चेतावनियाँ और प्रकृति का असंतुलन - शकुंतला मित्तल	53
किस्सागोई	
• कुछ रहेगा शेष क्या! - मंजुश्री	61
• सैलाब – अनिता रश्मि	72
• लड़ाके – दिलीप कुमार	83
कविता	
• निरुपमा सिंह	95

• अंजना सोलंकी	97
• शबनम आलम	99
• निर्मल गुप्त	101
लघुकथा	
• पिता का तकिया - कृति आरके जैन	103
व्यंग्य-विनोद	
• एलसर्ली पार्क की बेंच- धर्मपाल महेन्द्र जैन	105
स्थायी स्तंभ – प्रकृति और संसृति	
• एक चौराहे पर आठ - प्रेम रंजन अनिमेष	111
हिंदी छात्र परिशिष्ट	
• स्नेहा, बी.ए., हिंदु कॉलेज, अमृतसर, पंजाब, भारत	127
• जैस्मीन, बी.ए., हिंदु कॉलेज, अमृतसर, पंजाब, भारत	130
• अनुश्री शेठ, यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो	134
• सदफ हाशमी, यूनिवर्सिटी ऑफ टोरंटो	136
जापान के हिंदी विद्यार्थियों द्वारा पुस्तकों पर विमर्श	
• प्रस्तुति: तोमोका मुशिगा, ओसाका विश्वविद्यालय, जापान	138

जल: जीवन और मौत



संपादकीय



हंसा दीप
टोरंटो, कनाडा

जल ही जीवन है, इस अटल सत्य ने करवट बदलकर दूसरे सत्य जल और मौत से रूबरू कराया। नेपाल त्रासदी में प्रकृति के प्रकोप ने कहर बरपाया और सैकड़ों जीवन बहकर काल के गाल में समा गए। अभी इस जल प्रलय के बारे में पढ़-सुन ही रहे थे कि अपने ही घर में स्वयं अपनी आँखों से जल का रौद्र रूप देखा।

उस दिन तूफान की चपेट में था टोरंटो शहर। अलर्ट और चेतावनियाँ थीं। लगभग तीस वर्षों के अनुभव ने सांत्वना दे दी थी- “ऐसा बहुत आम है, कनाडा में। इतने सालों में अब तक न जाने कितने तूफानी बवंडर आए और चले गए।” बहुत आसानी से खतरे के संकेतों की उपेक्षा कर हम सब अपना काम करते रहे। शाम के लगभग पाँच बजे होंगे, अचानक आसमान जोरों से गड़गड़ाया। बारिश की उग्रता बढ़ती गई, टप-टप पानी के साथ भड़-भड़ करते, पत्थर की शक्ल लिए ओले भी बरसने लगे। कड़कती बिजलियाँ ऐसी चमक रही थीं, जैसे घर पर बम गिर रहे हों। तेज, दनदनाती हवा, खिड़कियों और दरवाजों पर लगातार थपेड़े मार रही थी। कुछ ही क्षणों में बिजली बंद हो गई और सेंसर बजने लगे। इस बात की सूचना देते हुए कि हम खतरे में हैं। हम कुछ समझ पाते, तब तक तेज गति से, हर तरफ से पानी के रेले उमड़ते-धुमड़ते चले आ रहे थे, मानो ठहाके लगाकर ललकार रहे हों- “रोक सको तो रोक लो।”

क्या और कैसे रोका जाए!